रमिया

नमिता सिंह

लाल होता सूरज तेज़ी से पश्चिम की ओर सरक रहा था। पास की टेढ़ी बगिया के पेड़ों पर चिड़ियों और कौवों की हलचल सुनाई देने लगी थी। रमिया का दिल धुक-धुक करने लगा। सुन्नरी का अभी तक कहीं पता नहीं था। रमिया बाहर नीम के नीचे पड़ी झिलँगी चारपाई पर बैठ गयी। उसके पैर कांप रह थे।

छोटी बहू पानी का घड़ा भरकर आती दिखाई दी। आजकल पूरे दिन चढ़ रहे हैं उसे। हज़ार बार कहा है कि दो चार दिन इधर सहूलियत से रह ले। निबट ले इस मुसीबत से, फिर जो चाहे कर...मगर मानेगी नहीं।

"अरी छोटी, ला मुझे दे घड़ा। तुझसे मना किया है न..."

"मैं क्या रात तक तुम्हारा आसरा देखती रहूंगी? काम तो करना ही है...छोटी बहू ने पल्ला ज़रूर माथे तक कर रखा था लेकिन ज़बान की तेज़ी में कमी नहीं थी।

उसने बहू के सर से घड़ा उठा लिया। डगमगाते पैरों से ऊपर गयी और टपरे के अन्दर रख आई। फिर उसने मटकी में से आटा निकाला। उंगलियां फिराती रही लेकिन गूंथने का मन नहीं किया।

"तू ही कर ले री रोटी। मेरा जी ठीक नहीं है। क्या बताऊं...सुन्नरी नहीं लौटी अभी तक...जाने क्या बात हो गयी।"

छोटी बहू ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे शायद अन्दाज़ा था कि जल्दी ही ऐसी नौबत आने वाली है। लेकिन वो भी क्या कर लेती? यूं ही खामखा की एक मुसीबत बिना बताये आ टपकी थी।

सुन्नरी को ससुराल से लौटे करीब छह महीने हो गये थे। रमिया का आदमी जब तक नौकरी में रहा घर पर सब ठीक ठाक चलता रहा। खुद म्युनिसिपैलटी में जमादार था। खासी तनखा। दो लड़के और दो लड़कियां। बड़ी लड़की पहले ही ब्याह दी थी। बड़े लड़के फूला की नौकरी कह सुनकर अपने रहते जमादार ने म्युनिसिपैलटी में लगवा दी। चार-पांच सौ रुपये ज़रूर खरचने पड़े लेकिन काम हो गया।

छोटे को पढ़ने के लिए चुंगी के स्कूल में भेजा गया। सोचा, चार आखर पढ़ लेगा तो कोई नौकरी मिल जायेगी। लेकिन हरिया...उसका पढ़ने में बिल्कुल मन नहीं। सड़कों पर आवारागर्दी करता घूमता। कुछ नहीं तो कूड़े के ढेरों को खंगालता रहता। आखिरकार एक दिन रमिया ने उसके बाप से कह दिया कि नहीं पढ़ता तो न पढ़े। न मिलेगी दफ्तर की नौकरी! पेट तो पाल ही लेगा अपना। दुनिया में बहुतेरा पड़ा है करने-खाने को...

और हरिया को मुक्ति मिली। अब वह सवेरे ही अपना बोरा लेकर निकल जाता और मुहल्लों के कागज़-गत्ते के टुकड़े वगैरह बटोरता फिरता या फिर एक डंडी के सहारे कूड़ों के ढेर उलटता-पलटता। कभी-कभी तो खल्लास लेकिन कभी-कभी काफी कुछ मिल जाता। किसी दिन मौज आ जाती तो अपनी खटारा साइकिल पर चूं-चपर-चूं-चपर करता हुआ मोहल्लों और कॉलोनियों की तरफ निकल जाता। रद्दी, लोहा आदि जो भी मिल जाता उसे बेच देता है कबाड़ी के पास। अपनी रोटी लायक तो मिल ही जाता है उसे।

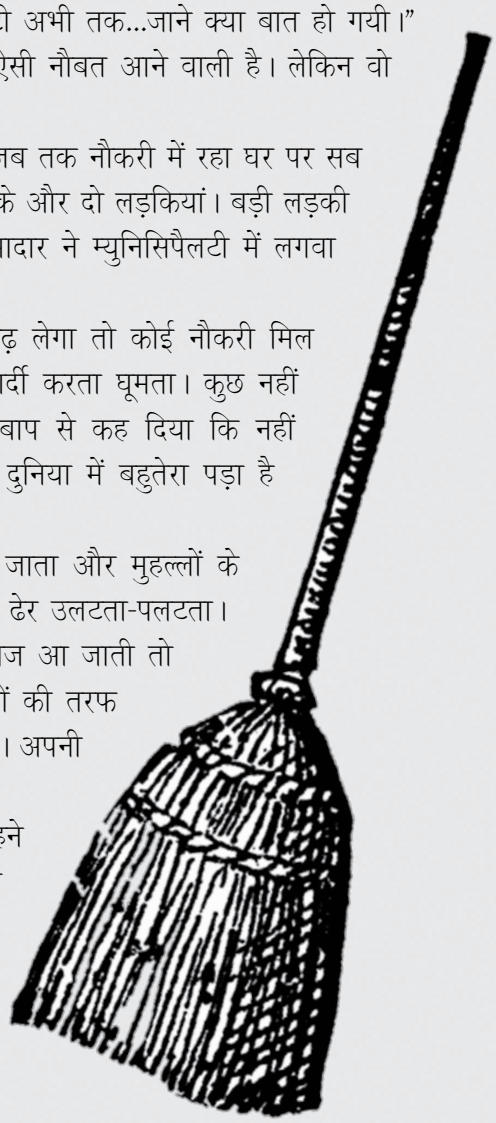

बुढ़ऊ के रिटायर होने के बाद आमदनी कम हो गयी। बुढ़ऊ की नौकरी न रहने पर पता नहीं हरिया के ससुराल वाले क्या सोचें-गौना करें कि न करें। इसलिए पहली फुर्सत में रमिया ने हरिया का गौना करवाया और बहू को घर ले आई।

बड़े फूला ने अपनी कोठरी के बाहर अपने बाप को एक छोटी-मोटी दुकान खुलवा दी। छोटा-सा मेहतर टोला-पच्चीस तीस घर। रोज़मर्रा की ज़रूरत लायक थोड़ा-बहुत सामान रख लिया। सौ-पच्चास रुपये लग गये लेकिन कोई खास घाटे का सौदा न रहा। दो-चार रुपये रोज़ की आमदनी हो ही जाती है।

लेकिन इसका बदला फूला ने हरिया के गौने के बाद ले लिया। एक दिन बेबात की बात निकाल, झगड़ा कर बैठा और हरिया तथा उसकी बहू का सामान ऊपर टपरे पर फेंक दिया! साफ़ था कि उसने कोठरी पर अपना पूरा हक़ जमा लिया था। रमिया और बुढ़ऊ तो वैसे भी बाहर दालान पर सोते थे।

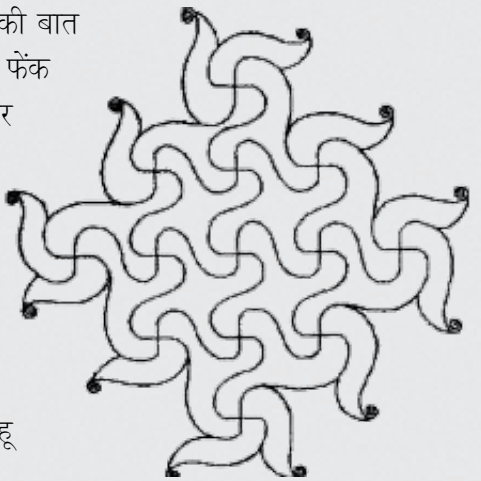

हरिया का वैसे ही मिजाज़ तेज़! उसने आव देखा न ताव, उठाया एक डंडा और दे मारा अपनी नई नवेली बहू पर... "लो, यही है न झगड़े की जड़! इसका आना ही तो तुम्हारे कलेजे में गड़ रहा है। ठंडा कर लो अब अपना कलेजा..."

बड़ी बहू फौरन भागी और उसने दोनों हाथों से हरिया को कसकर पकड़ लिया। फूला ने चार झापड़ मारे हरिया को और डंडा उठाकर फेंक दिया। छोटी बहू तो चीख मारकर वहीं लोट गयी।

रमिया को पता चला तो भागी-भागी आई। पहले जी भरकर उसने गालियां दीं—फूला को, फूला की बहू को और फिर फूला के बाप को जो अपाहिज बनाकर सब देख रहा था। फूला ने बाप को पैसे से क्या मदद की, मानो बेदाम का गुलाम बना लिया हो उसे। जब रमिया ने बहुत हल्ला-गुल्ला कर लिया तो वह उठा—रमिया के बाल खींचकर उसे दो हाथ मारे और बोला।

"हरामजादी—ससुरी! बहुत बड़ बड़ कर रही है। गाड़ दूंगा यहीं...।"

रमिया चुप होने वाली नहीं थी। उसने बुढ़ऊ को सात पुश्त किनारे लगा दीं—किसी को नहीं बख्शा।

फूला और उसकी बहू का भी क्रिया-करम कर डाला। वह समझती थी कि इन्हीं लोगों की कारस्तानी से सब झगड़ा-टंटा हुआ है? बकती-झकती आखिर में वह छोटी बहू को उठाकर बाहर ले गयी। दो दिन उसे पड़ोस के एक घर में रखा। हरिया और उसने दो रात मेहनत करके सड़क के किनारे बन रही बिल्डिंग की ईंटों को ढोया। छत पर ईंटें चिनकर उस कोठरी की शक्ल दी। ऊपर से एक पुरानी टीन डाली—टीन पर बरसाती का एक टुकड़ा... और छोटी बहू को ऊपर ले आयी उसके नये बसेरे में।

"यहां रहो तुम लोग। उन हरामियों के मुंह लगने की जरूरत नहीं अब।" खुद रमिया का क्या! जहां रहेगी, वहीं अपना खरचा पानी देगी और दो रोटी खा लेगी। रात सोने के लिए कभी छत के कोने पर पड़ी रहती तो कभी नीचे दालान पर आ जाती।

छोटी लड़की सुन्नरी। सबसे छोटी। मारे लाड़ के बचपन में रखा नाम सुन्दरी न जाने कब सुन्नरी हो गया? रमिया की लड़ैती। सजा-संवार कर छाती से लगाए रहती उसे! मां के साथ काम पर बचपन से ही कोठियों पर जाने लगी थी! रमिया घरों में झाड़ू लगाती, पाखाने साफ़ करती—और छोटी-सी सुन्नरी-ताका करती टुकुर-टुकुर! उसे अम्मा के साथ रहते अच्छा लगता। फिर धीरे-धीरे उसने भी हाथ में झाड़ू पकड़ी! शुरू में तो वह रमिया को मदद देने के लिए काम करती। फिर ज्यों-ज्यों वह बड़ी होने लगी, लोगों को उसका काम पसन्द आने लगा। अब उसने अपने कुछ अलग घर कर लिए। रमिया ने भी सोचा, चलो अच्छा है। दो पैसे जुड़ जायेंगे।

सुन्नरी रहती बहुत ठसक से। चुप रहकर अपना काम करती। नज़रें नीचे रहतीं! जब कभी नज़रें ऊपर उठाकर देखती तो उसका कोई मतलब होता। पहनने के लिए एक से एक फैशन वाले कपड़े, उसे कोठियों से मिल जाते! उन लोगों की देखा देखी सजना संवरना भी खूब सीख गयी! सुन्नरी जवान हो रही थी! चढ़ती उम्र-फुर्तीला बदन-तेज़ चलते हाथ। लोगों को रमिया की जगह उसका काम ज़्यादा पसन्द आने लगा था।

एकाएक सुन्नरी ने आना बन्द कर दिया। पता चला कि सफ़ाई संघ के लोगों ने अपने-अपने मुहल्लों में तय किया था कि बहू-बेटियों अब घरों मे काम पर नहीं जाया करेंगी। यह इज़्ज़त का सवाल है। जब तक घरों हमारी बहू-बेटियां डोलती रहेंगी तब तक खाक हमें कोई इज़्ज़त देगा। कोठियों पर काम करने के लिए बड़ी बूढ़ी चाहे तो चली जायें लेकिन और कोई नहीं जायोगा। जो जायेगा उसे बिरादरी से बाहर कर दिया जायेगा।

दूसरे दिन रमिया ने सब घरों में रो रोकर बिरादरी वालों का फैसला बताया! भला बताओ ढलती उमर उसकी। कैसे अकेली सारा काम करेगी! अरे-किसी को ठीक से भरपेट रोटी खाते नहीं देख सकते ये लोग। अब पूछो-काम न करेंगे तो क्या ये बिरादरी वाले आकर खिला जायेंगे हमें...हर किसी को किस्सा सुनाते-सुनाते उस दिन रमिया को लौटने में इतनी देर हो गयी कि उसे दोपहर की रोटी भी न मिली। सुन्नरी के काम भी पड़ गये थे उस पर!

लेकिन यह किस्सा ज़्यादा नहीं चला? एक हफ्ते बाद सुन्नरी फिर मौजूद थी अपनी मां के साथ! उसका चेहरा खिला-खिला पड़ रहा था? उसकी आंखें हंस रही थी? अपनी विजय पर वह बहुत खुश थी।

"क्यों री! आ गयी तू!"

"हां बीबीजी," सफेद दांतों की लड़ी चमकाकर जवाब देती वह।

"क्या हुआ तुम्हारी पंचायत का सुन्नरी?"

"अम्मा से पूछो," और हंस देती खिल्ल से वह।

रमिया! उसके पास तो पूरा पुलिन्दा था बताने के लिए। कैसे वह पंचायत वालों से जाकर लड़ी। एक-एक को ऐसी सुनायी कि बस! काम करने से क्या इज़्ज़त घटती है? उसकी सुन्नरी तो काम करेगी-ज़रूर काम करेगी। अरे, कोई चोरी नहीं कर रही, कुछ और गलत काम नहीं कर रही। कमा-खा रही है। आग लगे इन पंचायत वालों पर। सोचते हैं कि काम करके पैसा जुड़ायेगी तो फिर उनसे करज लेने कौन आयेगा?

सुन्नरी की शादी उसने खूब मन से की। लड़का अच्छा मिल गया। लड़के का बड़ा भाई बम्बई में था। रेलवे में जमादार। वहीं उस लड़के की नौकरी भी थी। अभी तो कच्ची थी—एवजी वाली लेकिन दो साल से ज़्यादा हो गया था इसलिए उम्मीद थी कि जल्दी ही पक्की नौकरी वाला हो जायेगा। और क्या चाहिए सुन्नरी को। लेकिन बम्बई...बहुत दूर पड़ जायेगी सुन्नरी। अरे क्या है? सास-ससुर तो उसके यहीं हैं। आती-जाती रहेगी। फिर रेलवे की नौकरी ठाट से जहां चाहे आये-जाये। उसे क्या कमी होगी! सुन्नरी खुश थी—उसकी अम्मा भी खुश...भाई-बाप सब खुश। आखिरी काम निबट गया राजी खुशी से। रमिया हैसियत से ज़्यादा खरच कर गयी। दो तो सुअर कटवा दिए दावत में। जमकर दारू पिलायी। कौन रोज़-रोज़ ये मौका आता है।

शादी हो गयी। लड़का दो महीने के लिए छुट्टी पर आया था। रमिया ने फौरन दस दिन बाद गौना कर दिया। अब बच्ची तो है नहीं सुन्नरी। भरी जवानी के दिन। परदेस का मामला। ले जाये अपने साथ।

लड़के की छुट्टी खत्म हुई तो वह वापस बम्बई चला गया, लेकिन सुन्नरी? वह तो वहीं रही। ज़्यादातर ससुराल रहती, कभी मायके आ जाती। बड़ा भाई फूला कई बार ससुराल जाकर मालूम कर आया, लेकिन बम्बई की कोई खबर नहीं थी। आखिर हारकर रमिया ने वहां के लिए चिट्ठी लिखवायी कि आकर बहू को ले जाओ वरना शादी बरखास्त कर देंगे।

होली के मौके पर सुन्नरी के जेठ और जेठानी आये। वे लोग उसे लेने आये थे। लड़के की नौकरी अभी पक्की नहीं थी, इसलिए उसे छुट्टी नहीं मिली थी।

रमिया ने जीभ अपने दांतों तले दबा दी। हरे राम! यह तो न मालूम क्या-क्या सोच रही थी। ये तो बड़े अच्छे लोग हैं। रोते-कलपते मां ने, भाभी ने सुन्नरी को गले लगाया और विदा किया। अपने घर जाये... राज करे। ब्याह हो जाये तो फिर लड़की अपने घर ही भली।

सुन्नरी अपने स्वर्ग पहुंची तो पता चला कि वह तो वीराना है—जंगल है। जिस घर में आदमी न बसे वह तो जंगल ही कहलायेगा।

उसके जेठ-जेठानी उसको उसका अपना कोठरीनुमा घर सौंपकर चले गये। वे लोग दूर, किसी और जगह पर रहते थे।

नई जगह-नया आदमी-नए लोग। धीरे-धीरे वह बाहर, पास-पड़ोस में उठने-बैठने लगी। नई जगह का डर कम हुआ। वह रेलवे वालों की कॉलोनी ही थी। कॉलोनी के पीछे ये कुछ दस-पन्द्रह कोठरियां रेलवे जमादारों और खलासियों की थी। सब अपने जैसे ही लोग थे।

और कोठरी का मालिक। उसका अपना आदमी? वह तो अब गायब रहने लगा था। दो-दो, तीन-तीन दिन हो जाते उसकी आवाज़ सुने? हफ्ते दस दिन में एक दिन ज़रूरी राशन पानी डाल जाता। बस! कभी तड़के सवेरे आता कभी दिन में। नहाता-धोता, कपड़े बदलता। खाना कभी खा लिया कभी नहीं? और चल देता। कहता कि रात की ड्यूटी है। वह तो डर के मारे अधमरी-सी हो गयी थी। उसकी समझ में न आता कि क्या बात है? वह इतनी बुरी तो नहीं? फिर, अच्छी है या बुरी—यह तो साथ रह कर ही किसी को पता चलता? उसका आदमी तो उसकी तरफ आंख उठाकर देखता भी नहीं था।

एक दिन! सुन्नरी ने पकड़ लिया उसे। दरवाज़े पर उसने भीतर से ताला डाल दिया। भूखी शेरनी की तरह हो रही थी वह? आंखें जल रही थीं। सारा बदन कांप रहा था। बुखार की सी गर्मी उसके सारे बदन में भर गयी थी।

सुन्नरी के मरद ने सुन्नरी के बदन से उठते ये लू के थपेड़े महसूस न किए हों, ऐसी बात नहीं थी। सुन्नरी की आंखों से उठते शोले, उसका लाल तपता चेहरा-उसने देखा, और वह चुप पड़ गया। उसने निगाहें नीची कर लीं!

आखिर आंखें क्यों नहीं मिलाता वह! क्या समझता है वह सुन्नरी को? वह भी कमज़ोर नहीं। आज वह बात करके रहेगी। सुन्नरी ने उसकी ठोड़ी पकड़ ली।

"मुंह ऊपर कर? क्यों भागता है इस तरह? साथ नहीं रखना था तो क्यों बुलाया था मुझे यहां?"

"मैंने कब बुलाया? तू खुद आई।"

"अपने भाई और भाभी को किसने भेजा था?"

"मैंने नहीं भेजा। वे लोग खुद गये थे।"

"तूने नहीं भेजा उन्हें? तूने नहीं बुलवाया मुझे? तो भेज दे मुझे वापिस?"

"तू खुद आई है-खुद चली जा।"

"अच्छा! खुद चली जा? शादी करने मेरे दरवाजे पर क्यों आया था? इसलिए कि इस अनजान जगह पर मुझे पटक दे और खुद गायब हो जा?"

"शादी मैंने नहीं की। मैंने तो मना करी थी। भाभी ने जबरदस्ती कराई।" और तू तो लल्लू था ना! नामरद!

सुन्नरी बिफर उठी। उसने तय कर लिया कि आज वह फैसला करके रहेगी। उसकी सांस धौंकनी की तरह चल रही थी। उसको फिर दरवाज़े की ओर बढ़ते देख सुन्नरी ने उसका कालर पकड़ लिया।

"कहां जा रहा है तू? यह तो तेरा ड्यूटी का बखत नहीं है? पड़ोस की बेदा चाची का लड़का कह रहा थ कि तू रात की ड्यूटी कर रहा है आजकल। ये धुर दोपहरी कहां जा रहा है इस बखत?"

"भाभी के पास। बुलाया है उसने..."

"भाभी...भाभी...भाभी। तेरी भाभी है या तेरी भी बीवी है वह! मेरा घर उजाड़ रही वह डायन"...और उसे लगा कि भरे बाज़ार में किसी ने उसे नंगा कर दिया हो। वह खूसट औरत उसके सुख चैन पर डाका डाल रही है। सुन्नरी की मानो कोई हस्ती ही नहीं...यह गहरा अपमान बोध उसे भीतर तक चीर गया। कैसा गुस्सा करे! किस पर को? इस मिट्टी के लौंदे—भाभी के गुलाम पर? सब बेकार है...और वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। उसके भीतर की सारी तपन, सारी आग, आंखों के रास्ते पानी बनकर बह निकली। रोते-रोते वह वहीं लोट गयी। उसका आदमी जाता है तो जाय! वह नहीं रोकेगी!

सुन्नरी तो बिल्कुल बेआसरा हो गयी। अब तो रही सही सारी उम्मीद भी खत्म हो गयी थी। इन बातों से बेखबर ही रहती या कोई मुसीबत आ पड़ी होता तो एक बहाना होता? अब किसके वास्ते वहां टिकी रहे—क्या करे! एक दिन मौका मिला तो सीधे टिकट कटाकर पड़ोस के एक आदमी के साथ दिल्ली आ गयी। इस तरह अपना सुख सौभाग्य लिए दिए सुन्नरी वापिस अपने घर पहुंची गयी।

जिसने देखा वही हैरान! इतनी हिम्मत? इतनी दूर से अनजान आदमी के साथ? वह साथ वाला ही कहीं लेकर भाग जाता तो? क्या दुर्गत होती? यह सब इसकी मां की शह है? उसी ने इसकी आदतें बिगाड़ी हैं वरना क्या यूं ही छोड़ देता इसका मरद? रमिया ने उसे घर पर देखा तो पहले खूब रोई अरे-वह तो पहले ही कहती थी न कि कोई बात ज़रूर है। चुड़ैल, वह जिठानी कैसा लाड़ जता रही थी सुन्नरी के ऊपर! ढोंगी-पाखंडी...उसने लाख शुक्र मनाया कि उसकी सुन्नरी सही सलामत घर आ गयी। वहां परदेस में अकेली क्या करती? कही मारकर गाड़ देते उसे तो? इतनी दूर से कुछ पता भी नहीं चतला।

सुन्नरी के दोनों भाई फूला और हरिया दूसने दिन ही उसकी ससुराल गए और उसके सास-ससुर, दोनों को जी भरकर गालियां सुनाकर आये।

सुन्नरी कुछ दिन चुपचाप घर पड़ी रही। फिर उसने रमिया के साथ काम पर निकलना शुरू किया। रमिया ने कुछ घर और ले लिए और पहले की तरह काम करने लगी। कोई पूछता तो वह चुप न रहती, सबको बता देती। उसे क्या शरम? वह हरामी जब अपनी भाभी के साथ फंसा है तो कहना तो पड़ेगा ही? वरना लोग समझेंगे कि उसमें ही कोई खोट होगा जो अपने मरद को बांध नहीं पायी।

रमिया ने अब अपने बुढ़ऊ और बेटों के कान खाने शुरू कर दिए कि सुन्नरी के लिए जल्दी ही कोई और लड़का ठीक कर लो। जवान लड़की चढ़ती उमर! चोट खाए सांप-सी फनफना रही है। कहीं कुछ उल्टा सीधा होय, इससे पहले ही कुछ इन्तजाम कर दो उसका!

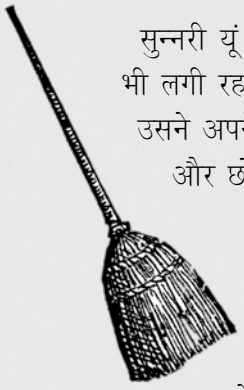

सुन्नरी यूं तो ठीक थी लेकिन उसने अब बोलना और कम कर दिया था। चुप अपना काम करती रहती। घर में भी लगी रहती हर बखत किसी-न-किसी काम में। सफ़ाई करती, पानी लाती, रोटी पकाती। छोटी बहू का पूरा काम उसने अपने हाथ में ले लिया था। फिर भी अन्दर-ही-अन्दर उठ रहे तूफान की सांय-सांय रमिया महसूस करती थी और छोटी बहू भी।

इधर कुछ दिनों से काम पर जाते बखत सुन्नरी ने रमिया का साथ छोड़ दिया था।

"तू धीरे-धीरे चलती है। मेरे कामों में देर हो जाती है। परली कोठी वाली मास्टरनी जल्दी बुलाती हैं मुझे...और वह जल्दी घर से निकल जाती।

और, आज अचानक यह हो गया कि सुन्नरी गायब हो गई।

छोटी बहू ने दो दिन पहले सुन्नरी को अपनी बकसिया में कपड़े ठीक से लगाते देखा था। उसे ध्यान आया तो फौरन जाकर देखा। बकसिया गायब थी।

रमिया को जब मालूम हुआ तो सर पटक कर रो पड़ी। फिर थोड़ी देर बाद आंसू पोछती हुई बोली।

"मैं जरा हरी नगर कॉलोनी तक हो आऊं। तू अभी कुछ मत कहियो, किसी से...

वह कॉलोनी तक गई! इधर-उधर खड़ी रही बेमतलब! एक चक्कर लगा आई! कब तक यहां ऐसे डोलती रहेगी। शाम का बखत। सड़क की बत्तियां जलने लगी थी। उसके थके-हारे पैर वापिस लौटने लगे।

रास्ते में रामजीलाल की कोठरी दिखी। आज अचानक उसकी कोठरी के बाहर ताला लटका देखा तो उसे कुछ ताज्जुब हुआ। दो एक बार रामजीलाल को उसने कोठरी के बाहर सुन्नरी से बातें करते देखा था! रामजीलाल रमिया की ननिहाल का था और इस नाते उसे मौसी कहता था। कुछ दिन वह भी म्युनिसिपैलटी में किसी की एवजी में जमादार रहा। फिर नौकरी छूट गयी तो रिक्शा चलाने लगा।

रमिया के मन में बहुत सारी बातें उमड़ने लगी। इस तरह से कोठरी बन्द और मोटा ताला? क्या कहीं बाहर चला गया है रामजीलाल? उसे दरवाज़े की दरार से हल्की रोशनी दिखाई दी।

"रामजीलाल-ओ रामजीलाल" उसने ज़ंजीर पकड़कर जोर-जोर से खड़खड़ाना और आवाज़ देना शुरू किया।

कोठरी के पीछे से कोई निकलकर आया। वह रामजीलाल नहीं, उसके ही गांव बिरादरी का भोलाराम था जो उसके साथ रहता था।

"रामजीलाल कहां चला गया भोला?" रमिया ने ज़रा ज़ोर की आवाज़ में पूछा तो भोला सकपका गया। कुछ जवाब नहीं दिया उसने।

"मुझे क्या मालूम!"

"सच्ची सच्ची बता रे भोला! हमारी सुन्नरी भी उसके साथ गयी है न! मेरी कसम सच्ची बता"...रमिया की आवाज़ फुसफुसाहट में बदल गयी थी। रमिया की बदहवासी और सूखा मुंह देखकर भोला असमंजस में पड़ गया।

"क्यों! क्या सुन्नरी ने तुमसे कुछ नहीं कहा। वह तो कह रही थी कि मेरे भैया और बाप को पता नहीं होना चाहिए और मेरी मां को सब मालूम है।"

सर पीट लिया रमिया ने! "अरी सुन्नरी...ये क्या कर दिया तूने"...फिर एकदम तमककर भोलाराम से बोली, "तू क्या कर रहा है यहां पर खड़ा-खड़ा? जा भीतर—पड़ा रह कोठरी में! खबरदार जो कुछ भी कहा किसी से!"

"मैं कहां कह रहा हूं किसी से? रामजीलाल ने कहा था कि ज़्यादा परेशानी की बात दिखे तो भाग आना।"

"अच्छा जा तू। ताला मत खोलना..."

थके-हारे कदमों से मेहतर टोला में रमिया घुसी। नीम के नीचे तक पहुंची तो उसे देखकर मानो भूचाल आ गया हो। छोटी बहू ने हरिया को और हरिया ने फूला को और अपने बाप को सब बता दिया था। अपनी ओढ़नी सर पर ठीक करके रमिया ने कमर पर कसकर पल्ला बांध लिया था।

उसे देखते ही दोनों भाई झपट पड़े उस पर। दालान की ओर बढ़ते ही उसकी शामत आ गयी। वह धक्का खाकर गिर पड़ी।

"हरामजादी...कमीनी...भगा दिया लौंडिया को। नाक कटा दी हमारी..."

"रंडी...खुद-साली छिनाल है और वही लौंडिया को बना दिया है। और ले जा उसे अपने साथ? कहां गई है वह?"

रमिया धाड़ मारकर रोने लगी।

"मेरी सुन्नरी, कहां चली गयी री..."

"चुप कर बुढ़िया ज्यादा स्वांग न कर। बता कहां किसके साथ भेजा है उसे, वर्ना आज यहीं तेरी लाश गाड़ूंगा" और सचमुच फूला ने दोनों हाथ से रमिया की गर्दन पकड़ ली।

एक सैकेंड के लिए तो रमिया को लगा कि उसकी आंखें निकलकर बाहर आ जायेंगी। आंखों के सामने अंधेरा-सा छा गया और सर घूमने लगा? पूरी ताकत लगाकर उसे फूला को धक्का दिया और भागी कमरे की तरफ।

उसके दोनों बेटों के सिर पर खून सवार था। वे इतनी आसानी से रमिया को कैसे छोड़ देते। बहन न जाने किसके साथ चली गयी थी और उनकी भरी पूरी इज़्ज़त पर बट्टा लगा गई थी। बहन मिल गयी होती तो अब तक उसका गला दबाकर छुट्टी कर ली होती। किसी न किसी को तो सज़ा मिलनी ही थी।

रमिया बाहर कोठरी की दीवार से लगी खड़ी ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी।

"ना! मैंने कुछ न किया! मैंने न भगाई सुन्नरी। अरे मैं तो खुद उसे ढूंढ़ कर आ रही हूं... अरे मइया...मार डाला बचाओ... मार डाला रे...बचाओ..."

"हरामजादी" फूला दांत पीस रहा था। उसने फिर से रमिया का झोंटा पकड़ लिया। धूल और आंसुओं से सना चेहरा, रूखे अधपके बिखरे बाल और दीवार से सटी खड़ी रमिया रोती हुई—दोनों हाथों से फूला को दूर हटाती हुई फूला ने रमिया का सर दीवार पर ज़ोर से दे मारा।

"बता कहां है वह रंडी...ऐसे बतायेगी... ऐसे बतायेगी... बता कहां गयी है... पूरी बिरादरी की नाक कटा गयी तेरी लाडो। हमारी बेइज्जती करा गयी..."

फूला उसका सर दीवार से मार रहा था और चारों ओर टोले के लोग तमाशा देख रहे थे...रमिया होश खोने लगी। बुढ़ापे का शरीर। थका हारा। सवेरे एक बासी रोटी चाय के साथ निगली थी और फिर सारा दिन अन्न का दाना मुंह में नहीं गया। तिस पर यह मारपीट? उसे लगा वह गिर रही है। उसके चारों ओर की आवाज़ें अब धीमी हो गयी थी। फूला की आवाज़ मानो कुएं में से निकल रही हो। वह दीवार के सहारे सरकती हुई बैठ गयी। उसे गिरते देख कुछ मर्दों ने आकर फूला को पकड़ लिया। हरिया को भी कुछ लोग हटाकर अलग ले गये। उसका अपना आदमी किनारे मुंडेर पर बैठा चुपचाप बीड़ी फूंक रहा था।

"अम्मा-अम्मा..." छोटी बहू की आवाज़ थी। रमिया का होश धीरे-धीरे वापस लौटने लगा था। सर के पीछे टीस-सी उठी। उसने सर दबा लिया। टोले के सभी मरद, बुजुर्ग आ गये थे और फूला तथा हरिया को समझा रहे थे।

"और देख री फूला की अम्मा! तेरी सुन्नरी ने काम तो बहुत ही गलत किया। ऐसे भाग गई खूंटा तुड़ा के। पूरी बिरादरी की नाक कटा दी।"

"अरे अपने पहले आदमी से इस्तीफा करवाती तब ढंग से शादी कर देते उसकी। अब यूं ही किसी के बैठ जाओ। भाग जाओ। इसीलिए हम लोग कमीने हैं और कमीन ही रहेंगे..."

"चच्चा, मुझे तो मिल जाए वह। जिन्दा न छोड़ूंगा और न उस हरामजादे को..."

"ये तो सही कह रहे हो तुम। सजा तो मिलनी चाहिए। नमूना रहे औरों के लिए। अरे, लोग कहेंगे कि छोटी जात के हैं, इसीलिए लौंडिया भाग गयी अपने मरद के रहते।"

तड़पकर रह गया फूला। उसे लगा कि सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते, बड़ा आदमी बनते-बनते सुन्नरी धक्का दे गयी। उन सबको फिर कमीन बना गयी। इतने दिनों की कोशिश, पंचैती...बड़े लोंगों के बीच शुरू ही रही उठक-बैठक, सभी बेकार चली गयी।

"एक बार मालूम भर हो गया। पाताल से भी खोज निकालूंगा। गोली नहीं, मैं तो ऐसा तड़पा-तड़पा कर मारूंगा कि बस!"

"आखिर गयी कहां? किसके साथ..."

"हमें तो चच्चा कुछ भी नहीं मालूम। यही ले जाती थी अपने साथ। हमने तो फैसला भी कर दिया था कि बहू बेटियां घरों में नहीं जायेंगी—यही नहीं मानी। अब बताती क्यों नहीं बुढ़िया। किसके साथ यारी चल रही थी उसकी।"

"देखो, फूला की अम्मा! तुम जानती हो तो बता दो। यह तो पूरी बिरादरी का सवाल है। सभी पर कलंक है।"

रमिया अब पूरी तरह होश में थी। मुरारीलाल की आवाज़ बहुत देर से उसके कानों में बज रही थी और वह चुप थी। अब जब सीधे-सीधे बात कर रहा है। तो बोलना ही पड़ेगा—

"अरे मुरारीलाल! मालूम है, बहुत बड़े नेता हो। चुनाव लड़े हो। अपनी हेड जमादारी से तिमंजिला मकान भी बनावा लिए हो जो इस गली में सुअरों के बीच अटाये नहीं अट रहा। हम लोग तो तुम्हारे सामने भी बहुत छोटे हैं लेकिन एक बात का जवाब दे दो। तुम्हारा लौंडा जब बाबूलाल चमार की लड़की को लेकर भाग गया तब तुमने खुद मदद की। उन्हें अपने घर पर रखा और फिर छुपाकर स्टेशन तक पहुंचाकर आये। तब तुम्हारी नाक ऊंची हुई थी। लम्बा बखत बीत गया तो तुमने सब भुला दिया। तुम्हारा वह कारनामा बड़ा पुन्न का काम हो गया और मेरी दुखियारी सुन्नरी ने एक गलती कर दी तो वह ऐसा पाप हो गया कि तुम सब उसकी जान ले लोगे..."

"चुप रह बुढ़िया" फूला बमक उठा और दौड़ा रमिया की तरफ। लोगों ने उसे पकड़ लिया।

"मुरारी चच्चा के मुंह लगती है! वह मुरारी चच्चा का लड़का था। लड़का और लड़की को एक तराजू में रखेगी। फिर नाक तो बाबूलाल की नीची हुई, हमारी क्या? आज तक वह पलटकर अपने बाप के पास नहीं गयी।"

"अरे गई तो थी एक बार जब कलकत्ते से लौटी थी। सारा चमारटोला उसके पीछे पड़ गया कि भंगन आई है—भंगन आई है। रहने नहीं दिया। बेचारी रोती कलपती यहीं आई। इसी ठौर रही।"

"ये बुढ़िया तो सठिया गई है। औरत जात अकल नहीं है। सब धान सत्ताईस सेर समझती है।"

"वाह वाह! क्या न्याय है! धन्न हो! तुम चमार की लौंडियां भगा लाओ तो सब ठीक। बहुत बड़ा काम। तुम्हारा लौंडिया किसी के साथ चली जाय तो बहुत गलत, पाप...क्या न्याय है...वाह..."

रमिया का मुंह सूख गया था। होंठ पपड़ा रहे थे और कोनों पर सफेद-सफेद झाग आ गया था। लेकिन वह चुप नहीं रहेगी। देख लेगी एक एक को...

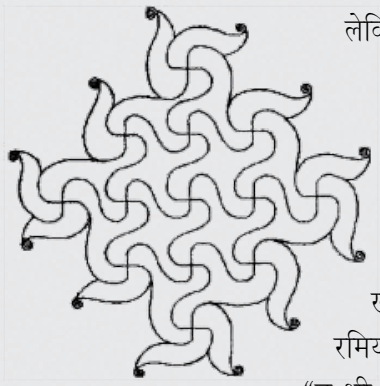

"और यह मिट्टी का माधो-जनखा बैठा-बैठा बीड़ी फूंक रहा है और मुंह में सोना देकर बैठा है। सबके सब लौंडिया को गोली मारने की कह रहे हैं और सुन रहा है। मेरे पेट के जाये मेरी लाश बना रहे हैं और यह बैठा आंखें घुमा रहा है। थू-लानत है। अरे भगवान्—कैसे-कैसे कसाई जन्म दिए मैंने!"

रमिया के आदमी में पहली बार हरकत हुई। मुंह-ही-मुंह में कुछ बड़बड़ता हुआ उठा। खांसते हुए पच्च से वहीं थूक दिया और नीम के नीचे पड़ी खाट की ओर चल दिया। यह देखकर रमिया के बदन में आग लग गई। यही ठीक होता तो उसे इतनी जलालत सहनी पड़ती?

"तू भी आज बहुत इज्जतदार हो गया है। तू मुझे कौन-सा ब्याह कर लाया था?"

रमिया की आवाज़ चीखते-चीखते भर्रा गयी। उसे ज़ोर से खांसी उठी और वह खांसते-खांसते बैठ गयी। भीड़ छंटने लगी। रमिया का क्या भरोसा। कौन से गड़े मुरदे उखाड़ने लगे। किसकी बखिया उधेड़ने लगे। फिर आज तो घायल शेरनी जैसी हो रही है। फूला ने इधर-उधर देखा। मुरारी चच्चा चुपचाप सरक कर जा चुके थे। हरिया कुएं की तरफ जा रहा था। रमिया ने लोगों को खिसकते हुए देखा। फूला अब अकेला-सा हो गया था। वह भी चुपचाप अपनी कोठरी में घुस गया। छोटी बहू अलबत्ता रमिया के पास खड़ी थी।

"चलो उठो अम्मा। बहुत हो गया। सब चले गये...खामखा तमाशा कर दिया...चलो उठो, चलो।" अंधेरा गहराने लगा। मेहतरटोला भी अंधेरे में डूबने लगा था। गली के बाहर लैम्प पोस्ट की रोशनी की एक पतली सी धार नीम से छन-छन कर वहां तक पहुंच रही थी। मर्द तो पहले ही जा चुके थे। औरतें और बच्चे भी अब खिसकने लगे। सिर्फ़ फुसफुसाहटें और चलने फिरने की सरसराहट बच गयी थी।

छोटी बहू का हाथ पकड़कर उठते हुए रमिया को अपना सारा बदन दर्द में डूबा हुआ महसूस होने लगा। अब तक तो वह चिल्ला रही थी। दहाड़ रही थी—मोर्चा ले रही थी। मोर्चा भी ऐसा वैसा? अरी मइया! सारी बिरादरी एक तरफ—उसका अपना मरद-उसकी औलादें एक तरफ और वह निपट अकेली। मार ही डाला उन्होंने आज उसे। बच गई वह। न जाने कैसे बच गई!

रमिया रो रही थी। मोर्चा जीतने के बाद बिलख-बिलख कर रो रही थी। उसका दर्द उभर आया था। उसका अपना दर्द था और उसमें अब सुन्नरी का दर्द भी शामिल हो गया था।